

কাব্য-প্রকাশ।

মাসিকপত্র।

" দ॰সার বিষয়ক্ষতা ছে এব এসবংফলে। কলেছেভরসভাদঃ সভসঃ সূজনৈঃ সভা। "

শক্কা ১৭৮৫ ফাল্ডন।

ः इ मः था।

द्योतवमाञ कोवा।

श्राथमभ ।

। गंड धकारिन एक भन्न ।

गानिय रक्ष्ण मांग्रंड निश्लाण्ड,
विश्व नेति जनार, स्वलमस्मन,
ख्वालिख ख्यमि प्रदेश म्यूलिख,
ध्यावारका व्यव्यक्ति कृष्ट्याल-गम।
(ভाषारगानम्म तिष्ठा खांद्यश्वारतः,
ख्वा बांचा ध्या ख्रू कोरीनतः,
बक्क् जांव कोनाकान खर्मक मा गर्दा,
स्वा निर्माण जमग्रंच खर्म बर्मा।
सम सम लंगक लेखिए चुमग्रंचन,
महार्देश प्रभाव कर्षा व्या क्रिक् स्वर्णातः,
स्वा क्रिक् जीमर्गाहक ख्रुक्ति खानरम,
स्वा निर्माण, कर्मा भागक स्विक्ति।
स्व क्रिं, खानरम क्रिका निर्माहक,

क्षा अध्यक्ति राष्ट्री फलरूट कार्रा क्षिन पर्या. कुषरीय द्वरातिहरू यहि महस्रामनः ष्यावश्चितः वस्त्रान्।, शृशसीय वहत्स ै भक्त गड़ा, भर्म्बर किंग् मना नार्के अन्त्र, किन्नु (मन, १०५म निष्कृति काण्य-मस्म, পুলাভন ছঃলখনে ছাখিড কি কালাল চ माजा नहाँ पाहरत काम कर्दिहाँ निर्माणी চক্ষুরত্ব লাগি , কিন্তু চিরজ্জালন, ৰ্ষ্ট্ৰেল জন্ম যদি জন্ন ভাক্ডালা, खाइ कर महाह सं हम देखें थ से , श्रीसिम्भ कनाष्ट्रिक योज ध्व लेस. দীনভা ভাষার পাতে চুড়িছে গ্রেষ্ किस दनव, त्यहे भोसकीस विविधान. हैमना-क्रिएन, ठाउँ किन मा ह हु:स मह। इत्रोकेशः काञ्चाप्रथ विकासम्बन् शाहक याति करा श्रम्भ किन (यह अन. कांत्र द्वारण कुश्रणिक एव काङः मानः € *

क्षानि रमोबरमत कांत्र देश्वकि अस्तिनि, উত্তরিলা ভারুমতী-বল্লভ তথ্ন, कि कविता " मांजन आंगात, मिन्छे संबि (!) . क्रिंटिक कार्नास्क मय ब्याजन क्रूयम । र ्डोर्शन कहिल। फरव न आह स्वीदर ! प्रमीडिक मकत्म। गंद्रीत ভारार्थक, नांका जन, मनिश्व अवन्य डिजकर. उथालिक वृत्रिहक इटलम अभावक। 43 কছ আইকাশিয়া সৰ। "কছিল। সেবিল, नां मां, आनि दकाम अशा कविमा अगम, -- মাস আনি জানিই বা কি বাকুকোলন ?----অনস্থা সংকার ভাব করিচেও আছণ্ড उत्व कि मा ---- अत्व कि मा १ हे, विन सामि, म डा भिया। (प्रथम विहासि (क चक्रम, (य क्रांश्वरक क्रांचिक क्रोतवकुलकामी. कुष्ठाक काष्ट्राच (यक्ष सन्म, करिट्राम, ७१८६ भाज এই खामार्थाय, भाखनित्रात ष्रम, वीवष्ट्र हीदन. बारम मनार जारण, त्कोतराना कारा। ायक्रभ (कोटयमान कृषक्रलटस्यो, আমাৰ হৃদ্ধে কেন হয়, অনুনিভ १५ तिख मकति कर कर कि विस्कृति । पद्र भारत संस्थान के अर्थ अर्थ दिखा क्यांनि द्योतरमाथ ननाविकनटक निर्याष्ट्रम विशास्त्र अ क्षत्रथ मकन. नकुष कि एक कु एक्स कुल्लिखानावरक, अधिरत (क) इत्राह्णे मित्रक (करण ? कुक्रम्थ-नालमह कुनुश्चित्रम्. ब्याति छारोरभन्न मृत्य सुख्य देवन्छ। क्रिकेट्रिक मध्य कटन कि एक्ट्र अगम,

चाकूत देकोवर खानो, कहाइनेहे क्या ?

य भारतगरन कतियोदा निश्चीकन, नियुष्ठ किछि ब्याहा. मन्द्रम, श्रामन, कतिराजिक मञ्जूशीम सांशांत क्रियन, ভারলাগি ছুপিত নৃপতি কি কান্তে? अतल महारक वीत. निमक्ति कहा. गह्छ अभव नश्. कह माडा कि स। ? अमकल विषयाएं ठाडे देशनी शत्। क्लान कार्ण क्षा इसला, महिक्का निमा ? শত্র সেইভাগা আর শোগা বিলোকিয়া, যার প্রতিনিল----প্রতিষ্যান----প্রতিক্ষণ, শুষ্ক হয় শোণিত, ভগ্নাশ হয় হিয়া, ाकि भीटर मंज्ञ मर्ग मर्मिएंड क्थन ? 35 * अत्य कूक कूलाश्वत चुनोत स्वीत! পরিবর তুল্ডিন্তা, কি চিন্তা, কিবা ভর গ किছू कान देशरी दशन, छेलाग्न दाहित করিব, কৌস্তেরগণ হবে পরাজয়।" এও যদি কহিলা গান্ধরিরাজয়ত, নীরবে থাকিতে আর নারিলা তখন, উ গ্রন। মুর্যাধন, কোতে অভিভূত, शानम गिमात उँदि मजन सहसः। ^ককি কহিল: মাতুল!*—কি কহিল: মাতুল! অস্কিয়ুও অখনি, নাহি সহিষ্ড ব্যাম वृगित'त जून---हेब्र सूनिवाह जून ! रक गरिकु a कुर्लागा कुर्ति। एक गर ° महिक्कु'ङ यनि सम महीदत कि खिर मा योकिङ. शं धरभरभत चार्श्यामः সম্ম করি, কেম্মেতে রয়েছি জীবিড? এগনত, দেহে বাস করিতেতে প্রাণ ? আমি কি ক্ষতির প্নাক্তিরবীর-ভৈঞ, चारक्रम ? मा कामात्र चारक् यात्रक १

40

ক্ল দেখি মাতুল ! ভূমিত বিক্ল আছি, (कांन क ब — कांन् महीं म दीवनत. শুরুর উয়তি সার আর্তা অবনতি দেরি পারে সাত্ত্বিতে আকুল অলুর ' शांश:दता क्लांडि मम (अर्थ किंडू मध. কি কি না করিলা ভারা অসাধা সাধ্য ? আমানাবা জগতেৰ কোন কাৰ্য্য হয়? बम मग महाय तं जिस्त नराजन ! (ছ যাত্র। শাজুলক, এই সমাগ্র: महीला, तिल्लातकर्मुनी वसमजी, देशरहर अकहर हा आधिशे हा कहा, कुछ न्याह, श्रीक्षावता कतिक नद्धांकि! भाषा मा (साह मार्डि कहिल प्रजीत, অসংখ্য লোচন কেরে দ্যেছে বিশ্বিত. पूर्विश्व खाल्या कतिहल नितीकन. বাজস্ব মহায়ল---হাহা লোকাভীত। এয়াণে কেপ্রেসগর প্রান্ত্র যেমন <u>ट्रिश्चिमा, श्याल अङ्ग्रक्तमात्रः.</u> (प्रशाहित्क ब्राह्म्य वा जैन्द्री अभव. शारत (इन, आर्इन कि किन करारांक ? भाखनगर्भन बाह्यनर्पाटक मिर्भक, कट्स (भाषाचाचा क्रमा (हानि अशीश्वरत, অপ্নান কভনা করিল। অনুচিত. म्बन्टन रमगब रमनेट्ड कत्तर विषदत ! अप्रे घडेगांत,--- यशि कृत वित्तवनः. **ভবে এই ভূবলয়ে ঘ**ত রাজগণ, अवोकात करेत्रोटक (मोत्र क्यमांमनाः कि करत डीहाता १--- महावन (कोस्ताब সেরপ প্রতুদ্ধ আর সেরপ বৈত্রন, मिहेन्सर्भ (७७, जात स्माहे सहसाह, নিরীক্ষণ করি—হায় অধিক কি কব ' fermi ni Beren via, so nit pia i

जारिनानाव कामाँस क्**तिरह श**न क्रेन, कुत्रख शास्त्रवर्गन भटम श्राटम क्यांत्र, महिन्ना, मनतोरणीक प्रदक्षक रण मन, ভবুক্ত স্থিতী নাহিক আনায় ? এ व्यमाना जित्नत क्यां कतिमां व्यक्त थाक डांश ट्राविन क्रमसटन शक्ति। बाह्य तनगर्थी, (महे की ब का बाबन, ट्य ज्यश्मानिला, चाति वक एव दिता। " अडे गांव नजानटल क्षित्रा रोडित. शक्ति, कड़ेना कुक्षिकि दुर्गिषिन, अकिपूर्ण अवाश्यि इत अञ्चलीत, त्मांक मोर्चमान नीत कतिमा क्लिमा! कहिला गलाम छाट्य विशाशि श्राटांब. ^ आमि कडि अडोजन ग्रेग्यंड नहे. सीटनाक: छाटउडे क्रशमान अधकार, मक्ष करि अथरम। कीवरम बीएस सके ! के ब्रीय नगरम युक्तिय काराकान. मास्मित्न, महकार्श कहिला देवकर्तम, "कड कह मार्थ, दिर्माशत्म अतिकन, छराहार छीम, कि कि क क्रवहम १,, डे हिला दकोररवन अक्क । हार्यः चम " मार्थ कृष्टि (महे हुः रथत मः वीम, बकाकी शहिता त्यारत कार्यन के विटिन, (सम्बद्धाः भागाः क्रांकः। भूराहारकं मान । धुतिशिव ताजेशूटत कान कान खान, न्हि छेटक शिष्ठित, दिहार जन स्था नयः द्वित्करिन्नू यमन, न्कृष्टित्क चल 'ब्रान कति, छाइ। इंदिल (म कीमद्रतान हा। व्यामि हेड। माहि क्यांनि, समितपूर्विक कल सम. खिम श्रेभ किन्तु नर्गल. वामूटंबर क महताबद्ध महत्वा कन्या कि छ, क्रम काहार भून बहुत्रामार्ग

टंबरम क्रांतिमांच हेना कृतिम ब्रहेम. राष्ट्रिक टेस शहब आहर जारिक जेगानिक, क्रीतम महत्रामी : किन्नु छत्याछ उचेन শ্লানত সন্দী মাথে **হলেন পতিও**। কুলে বাঁরা ছিল ভারা সুসিতে স্কলে नितिल कांग्रीत स्था क्या कांग्रीत, मिन गानशतम (बहु:श कामरस, ৰচনের শক্তি নাই তাছ। ধণিবার। फलबच्च कामीय कतित्र। भिन्नीकन, कूटनरट७ कि कि कब्रिक्त विकासिता, क्र व मण्डि इसका क्षाप्त, कुर्व्हन, 'अकि ! अकि अकि !' वहम डिठिन को मिता। ८५ मृद्ध, व्यायांत्र अहे तक्कष्ट्रमानाद्व, এককালে দংশিত সম্ভা বিষয়ত্ত, किश कर राकारक किथ अकराहर. ভাতেও এরণ নাহি ব্যথিত অন্তর! फोरमत (म ' र्डान श्रीक ! ' भेक का जिम्रान, लिशः नार्थिक भारत कतिम त्यमन. दाथित माहिल स्मारत मत्याक मकूरण, শিখন করিয়া দেইরপ কোনজন। £ 🛣 (सूथ दस्य दिश्यमण्य क्रिया विल्लंब. कड़े तककल मधारतीय कि शीवरित. कि बद्धा, कि निया मिद्रिमिल। त्म त्नरिक्ष विश्राही- या विथा मा क्षेत्र कार्ममाहन !" अक कृष्टि अध्यह मालिमा मर्गिएक, प्रकल रहेल ब्लाहा प्रशिष्ठेरहरून. ब्राक्तमथा ब्राध्यम् न्याति ध्वरन्धिरः कहि ' अह श्राकित्नाम अन अहेकाल।' क्रका क रिल ------ निर्माण निर्माणिया, "अक्षणेशास्त्र मध्य द्वार मारे कात् क्रमाज कार्रह, जीम यथा माजादेश।

भूरतन मित्रम वह कित अखिक. यथा व्यवस्ता सुद्र क्टब्र केनेबाक, रमहेक्टिम धारा दिशा चंड्र ह देवेशिवड, প্রতিরে বস্থা, ভবে রক্ষে আত্মধান। रीनवल कांधि वल, भौतिय (कवतन, त्मके जीवरकान जीवमञ्जल रक्षतिएक ? कांज नहिं मधा यम व श्रुनाकीत्न, উচিত লা হয় এরে ভিলেক রাখিতে! टेर जनरमद मुख्यानारमा विकास. (पर मर्ग जनारमाथ (श्रम जानिजन । फुटलाटकटङ आंत्र दम्यां शाहबना क'मांद, शतरतारक रयम कर शाहे मत्रमम ! . ভবস্থানর সহকাস ভিরক্তন. वाक्ष्रमीय यय मत्थ जनाजना खत्न, কে আছে বাদ্ধৰ মন ভার ভার সম, ममिशा यात्रे द्वामागरम केंद्र करहा द्वयत्कञ्च समार्थक काश्रिक केलाह्य, ভিম ভাব মনে ন' কৰিও এক্সণ! लकान तरिल !- जुमि जीन गम घारत. (मर्थ, जमा कर कार्त तक्तराहरूका। 200 অন্ধ পিকা নয়,—তাঁৱে অনশা কৰিবে! ভोगक्र व्यथमान मः शांति गहिर**ः** रा। जनमानिष् आन् । परहरक विदिव क्य १ 'डाडे हलिनाम अलाक **रहेरड**! व्यान साहे द्वःगामन व्यवश्वविद्या क्षनमीटक, (मथ इडेअ न), दिखाइन। हीं हारे यम् च्याधिक छन। शित्र उद्विष्ठ कारी नाहि कतिलू माधन, क्तिमा, त्य् अवस्था, राप्त ! आमि जोक, माजिलाम ल्यापिएक कृष्टिक लिखागरण त्काम् यूर्थ ब्राह्म क्षांति शक्ति वेश क्षांत्र?

এই রূপ বিরাপ, কবিলে দুর্যোধন,

দুঃলাসম, কর্ম আর সুবল মন্ম,

যার বেই অভিমত, প্রকাশিতে সমুলাত,—

মিদিডলাজুল সর্প মিড কর্গ প্রথমে,

গজিয়া গান্তীরক্ষরে, সাভিমানে, রোবভরে,

আইছিলা বক্তা, সম্বক্তাপুর-নির্মে: ১০৬

ইতি কোরবদ্যুতে কাংকা দুর্ঘোধন বিলাপোনাম প্রথমঃসর্গঃ।

বিলাপতর দ্বিণী।

প্রথমসর্গ।

(পতি বিয়োগবিধুর। রভি।)

্যোগীশ্বর শন্ধরের নেত্রানলে কন্দর্প ভ-শীভূত হইলে তদীয় একপ্রাণাপত্নী রতি ব-ক্ষামাণরূপ বিলাপ করিতে লাগিলেন।)

कामिनीत समय अक्षा, मिषा इरेने !-बद्धा क मा न्या. पृष्टि हेवा माछा देश. व्यामाध कर्मत खटन, दक्त विश तरिहत ? कता कि कि कि कामिनी है और ले शायांन वा वक्त मह छाहाह समाम ! श्रानमाथ, এই श्रान, जामान करहिए मान, জীবন যৌবন সৰ ভাষ্টান ডেম্বার ছে. रमञ् क्षांकि कलभात, मिलमीटक शहिकात. करि शांत गया, जुमि करि तम अक्तांत हर. শুচির প্রেমের পত্রে করিয়। কর্তুন, চলিলে অপরিচিতজনের মান্ন ! उत्हमाथ शिवहर, कथम जिथावहर, কোন কাৰ্ণা ভাষারত করনি সাঁধন তে. আমিও বিত্রীতিকর, কার্ম তব প্রাপেশ্বর, প্র'ণ মন গোচারতে করিনি কথন ছে. करव आक काळा कालि कहिन वर्रम, मर्गन मा (मध (कम १ (क शिशमर्गम । আগে নাথ সংখ্যান, না ছইডে সম্পূৰ্য, অর্দ্ধোক্তি মাত্রেতে, হতে উপস্থিত হাসিয়া करत डार्कि दावशाव, डेखब्र मा कर उन्ह. দেখ ছঃশিদীর দশা একবার আগিয:! আর কেন যথেষ্ট হয়েছে হে ক্লেক, धांनरमः भतिहास बाहे धार्याक्रम । করি চিন্তা বহুতর, ডোমার অভিযুক্ত, कार्ध किछू चार्डिनेट्स, डेमिड मा रह दर, अक्षांक गटम एक, ट्यांजुटक दराजी ममग्र. कतित्व थीर्वा पुरि, मार्मत राजाम रह, क्षंकीमित्रा आधि त्छार। कतिन उसन, त्महे त्मारिक कटना कि टक, मिले ह अमन ? किया अन आहि जात, तम मगत अकरात. कर्गा थांन को मात्र कतिया निक्लिंग हर. धोर्गिष्ट्र (क्रीयक्रातः, छोर्गत क्लारत करहः, দূৰিত, ছৌৰায় কুল বুগলন্ত্ৰ হে,-

अ जि तम् तम कथा, कश्चिम पहन. वित्रहमहान, दूशि कृतिह माहन। ে কিডব প্রাণেশ্বর, কহিতে দ। নিরন্তর, भारत जुनि मरबाधिया, मध्द दक्का रक, ाक आया कामात मय ? इत्हिकेचृति, मय अधिकित समरह तरहरह अस्मिर्न ^क रह, " स्रोप के आंगान---आर्थि, कथात ट्लामांत्र, জুলিভান, সভা নিখা। না করি বিচার। আজি ভব সে ব্রুম, সভাষ্ঠ বিলক্ষ্ व्यतिष्ठश्च व्यक्तिका किंद्रश्चा विद्यान ८ इन् त स्ताम नाम शह आंगांत अ कालत्त्र তৰ সংল এখনি ছইত ভশাশেষ ছে। कडे डांड इंडेल-मा १ त्याहिवादत मन कहिए । मन क्षा?——अड अन्युम ! रगारत राथि बेश्टलाटक. श्राट्य कृमि श्रेडलाटक, मतीन धनांती शल, इंड इंड इंड रह, আৰ্থি কি এ লোকে রব? ভবানুগামিনী হব. किषुकांत आर्वश्वर, अर्टनश्व ३० हर. कालमच केटम म। हिस्तिर अन्द्रिक, तिक (लोकरणत खरत क्**टेटकरक्** छ्रश् कृष्टि करल अस्तर्रिक, ल्याक मन विक्रविक. দইল যে প্রাথকান্ত, তব বিভূষণে ছে, अंडा भेर (कामु कम, स्थापुत्र मिद्रीकान) करितारत शांतिरवरः, अ कतकत्म (इ, टनकोरमद सूथ नाथ, ट्याकांत्र स्वक्षीन_ह एडाम। विमा तक ऋट्ष विस्टा अकलिम ? ভোষ। বিকা কে বা কার, নিশাকালে অভকার-गमाञ्चय-मत्नीएक जन्मीविष्ट्राप (६.. अभि यम शतकम, इटलअ,म्बद्ध सम,---भावित महेटल व च. कांत्रह स्नामद्य **५कारी माधननको कुलियोज लाह**ू 👵

(市) 實行者 四門第一一一時間 (市) 國於者 開門海縣。

नांकनी---- नांबाबा बदब, गांदा लाहक क्राहि बहद, ठिडा (क्रम-लिम), एवं बहम मालिक (ए) जारा! वारा लादन रह, क्षाकृतिन, द्वेद इहे. रिष्ट्रिक जात मामा विनादम भूतिक दह. त्म रांकनी जांगानिम् एह तंजित्रम् **उक्नीगर्भत हरूत क्लास्ट्रित कातन ।** হে অনক, নিশাপতি, তব প্রিরবন্ধু অতি, शिह ! स्ट्रेटन फिनि, श्रुट व्यवगढ (इ, **डाटक ठूमि आनि शम, अनिश्रमी अिश्रमम,** विमात इट्राइ हेर जनत्वत गठ ८ इ. कुक्षशंकराज विश्व हरता उरम. "इक्तिहर्ण।" क्रिट्रिन, ब्रज्ञ हिस्न ! न्यांगरी विकात, किया श्रांकम जात ? शशीक सूधांत्र शांत्र, विट्याप्तराप्त ८६, তোগাবিদ। तमसत, तमसून। मधूभग्न, रत, कोर माथा तरम, तमाहित्य मन (क ? ख्यत खायम क्रांकि मा टेक्टल अर्थन, कालांक कि शाद कड़ बंब्रिट इस्म ? চুতাত্র—ওকে বাব হার হস্ত মদোহর, হরিত, অৰুণ বৰ্ণে, আহা আহা আর ছে शोरकत कुन्छ है ऋता, यायात श्रकाम करत निकाम, स्टेश्न छाट्रह, धरन श्रम कांत्र हर ? जूनि माज कुलधन जूनेन मानातः ভোগা বিশা চুডার রে কি মইবে জার! अटह श्रिय क्रम् श्रांत, देवरत पूर्वि कछ याहे, मधूर्णिकारत मञ्च्छार निर्माणन दर, ভाराता त्यानसर्वता, **एव न्याट्य अका**ज्या. द्वित भारतः सम् महः स्वित्यक् त्रोकम् (वर्ष_{र स्व} दनन का कतिहर ? यांत्र वस विक्रकार विश्वविद्यालिक अन्य काम विश्वविद्या । कार्ड मार्थ, श्रेनबीक, यति स्मा क्षेत्रहात,

उभग नाहित्रहार के वातान द

প্রিয়োক্ত পাত্ত বত পাক চিরঅমুগত. जातमरत सत्रज्ञातिका विभिन्दताच कर्ते (इ.) कुलश्च दत, कर छन कारवानन मगत भ किएक, दक्दम कुड़ाक मग्रम। शाहत ! दावड श्रम, कड कथा वटल करत. वाहिएक दश मग कार्ड ध्यम व्यक्तिकम रह, মবি মরি আছা আছা! খালণ করিয়া তাহা. त कतिएक मन-गम एव कतिएक मन उर ' कार्त कन. शक्यां व युर्थत रहन, भारत (म कु: रथेत कथे। कतिर्ड : ज्डां भने ! क तमिक-तमदाज, व्यवत् कू सूममांक. ফভ না যতকে ভুমি করিয়া হচন ছে. -(मादाश केनिशा कछ, - माजादिल मत्नामछ, যে অক্ষে যে জলভার হয় সুশোভন হে। কিন্দ্ৰ মাথ ! ভবকৃত পুসাভূষা গায় বহিয়াছে, ভূমি এবে, রহিলে কোথায় ? চবণের প্রসাধন, করিবারে প্রিয়জন, আরভিলে, হার হায়! এমন সময় কে. নির্দ্ধয় দেবভাগণে, ভোমায় স্থারিল, মলে, ङ्गि, त्म आहिङ्गकांज, मा कति नाभम, ' এই आंति' राम अतम आंशोति आगार. अञ्मटनं र्गाम,--- कृषि ब्रस्टिम cकांथाय ? " आगि " राम अध्यकात, क्षमं श्रुवादांत्र कर गाँडे विमन, कि जानि दक्त, जांच दह, कि छाविशा दिलयन, क्र्—शकाणिया करू ? जानि जामि दूषि मछ. धूर्ड मोद्रोज त्र । अम, बांबशम देवांत कालटख त्राञ्चिक करत रमंड, रंगीन क्षेत्र भा एस डेव्डिं। मांच, ग्रतरमोटक टगरंग. कंछ ग्रतांक्रमा त्मरन, टकामारक केविया नाहि केटन रककन दह. अटलांखम (संबाह्या श्रीवांखाटव जूनाहेश).

Cसेमाबीक केटड हिएक अ हाँ उ तकन (ए.

SOWN WITH WATER WITCH ! कारहार्न कृति छव ब्रिश अकटमन । मा, मा, अने वक द्वाप, स्टाउटर,--- विसदत दुव ! কাৰতে, যদিও জামি, নার প্রেক্তিভ কে, उद् अर्थरात्र त्राटक, अकल देवार्टकर इत पात निमा त्रिक हिला, करनक जीविक (ए i 📜 রতির পালেতে এত নতে সাহারণ, अशराम,-- छाडेट्ड दिसाटम भारती (इ उल्लंड, किनो कर ! भनत्मक नत्त्र छर. डिडामलगाती इन, नाहि मध छात (६, विधिव कि विख्यूम, मन्त्रीत मजीवम, হরকোপাইতবেশ দ্বিল ডোমার হেন অপার এটার আর মাধ্য সভমা কোৰ অভাগিনী ভাগো ঘটেৰা এমন ? হে নাথ, স্বকীয় ক্লোড়ে, ধনুটা রাখিয়া জোরে, मातला माधम छात कतिएउ कतिएक हर, शिश्मणा मशूनक, मधु कि ?——भीवनावक. विविध त्रक्षाकणाः, कविष्ट कविष्ट । ६०, केशम महामाशांद्र अकरात अकनात, ट्रिकटि**छ एव. छाडे भटन क्टू**लट्र आगाहि। का का का । अभिनत्त्वक, यक्तिरमुक्तक छत्र, मधु, शिनि चहर्छर्ड कतियां हत्रन रह. कुल्यम, कुल्यमाञ्चश ! विश्वविशः ভवाह्य, कतिराज्य जन करते आंगरत वार्थनं रह ! कोशा **क्षिति ? मा केर्ट्रिक ट**लागाह मकन, इत्राज्ञांमल निथा कृतिन भाष्य ! मा, अ प्राफ्राया सबू, वैश्व ऋतिवर्देषू, काट्य वैधू-वैधू-मध्. कत्र मतम्म (इ, ट्यांगांत वैश्वत कांत्र, अन्यस्य गांज शांत ! বিকীণ করিছে ভাষা পোড়া সমীরণ হে। अहे प्रणा अहत्यां कतिहां मितीयन,

नाहित्व कि क्षांत्र क्षीन कहिएक शांतनी

नीवर बरम् जूनि किंग ध्यम ? एर नमस भोजा निधि, स्ति एक शिक्तिथि, खीकांकि कामि था शोश्व व्यक्षिय किन्न ! माखाका खबनता, कृती विकालश्य शहन, माखा कि एर बैंग्ड !—मह शांदे स्था चंडिन !

প্রাণেশের প্রাণ বিধি ছরিল বখল,
কামায় বধার বাকি কি কার তথন।

যা ছোক হে কতুরাজ! বল্প তুনি,—বল্পকাল

কর, কানি স্বায়ী লোকে, ছলেছে ব্যক্তিত ছে।

লেহ চিতা লাক্টিয়া, ভাছে দেহ লমপির।
পাতির পাকাতে ভাগি হই প্রধানিত ছে,

गयम करिए इस शिक्ष शिरह शिरह, जटक्य ध्रीकृष्टिया अक्षकृष्टि जात्स्। माजने तम्थे, निर्माकत, अक्षमिक स्टूल शंत, किल्लाक मूख इस मास्थितिक करने त्स. विद्वार जनम गर, नम्भान, पूर्व कर, शिक्ष विमा जानि तिस्क महिद त्यारम त्स्

পায়ৰ তৃশ্পের ভূজা জলক চিড়ার, শশ্বি আনেখন ক্ষেত্র, বিলেপিয়া কার ! कार बंध क्रक निम, बंदम क्रमूरताधारीम ब्रह जिल्ल कार्माविद्या क्रमूपमंत्रम दर्द, काकि क्षविद्या लाह, जब मधा-श्रिका हाथ. हिजामधा, सूर्वाक जाहितकम दर। इतमा क्रमान हैत्स क्रम् क्रमान !

রাখিব সা প্রাণ-প্রাণে কি কাজ আমার?'

চিড। আবোহিলে আমি-জানত আমার সামী
আমা ভাড়া ডিচিতে নারেন এককণ হে,
অধিক কি আর কব, অবিনিড মহে ডব?
মলর সমীরে, প্রাঞ্জানিও ভ্রডানন হে।

দেখ কেন বিশ্বেত হওনা ক্লাচন

নথা-শোকে—শোকে কিছু গাঁকেন আরণ।
তিতায়ি নিশিলে পর, দিও অতে প্রিয়ন্ত্র,
আমাদের উদ্দেশেতে একাঞ্জলি জল হে,
তদ স্থা পরকালে, মুম সৃষ্থ এককালে,
সেই জল পান করি ছইবে নীতল ছে।

হে মধা। তোমার সথা আমার সহিত,
ভোজন করিয়া বড় হইতেন প্রতি।
ভাষিক কি আর কব, ভনতর হে নাধব,
পিওদান কালে তব স্থার কারণ হে,
চঞ্চল পালবাহিত, চুডারুর স্থানাডিড
করিবা অর্পন স্থেন, করিও অর্পন হে,
ভব স্থা চুতপ্র চুডোর মঞ্জরী,

ভৰ স্থা চূতপত্ত চুজের মঞ্জন। ভালযাসিতেন, ভাই অনুরোধ করি।

> ইভি রভিবিলাপো নামে প্রথম সর্গ।

· SAILSEN AFTE MEINE!

विदिवदक मा

ইচ্ছা হয় দেবগণে ক্রি নমকাব.

মা, না, বলীভূত জাঁরা পোড়া বিখা চার!

তবে বিধাতারে বন্দি, তাহে কিখা ফল "

তিনি কর্মফল দান করেন কেবল।

কর্মের আয়তে যদি রহিল সে ফল,

দেবগণ, বিধাতার বন্দিয়ে কি ফল?

সে কর্মের চরণেই করি নম্ফার,

যার পর বিধাতার নাই অধিকার*।

সাল্লভাবে: বিবাক, নির্মালমতি যাঁরা।
আহো ! কি দুক্তর কর্ম সাথেন তাঁহারা !
যে ধন বিবিধ উপভোগের আধার,
অবাধে সে ধনে যান করি পরিহার ;
পূর্বেতে যে ধন মোরা পাইনি কথন,
এখনো হলনা করগত ষেই ধন,
কিছুকাল পরে যে পাইব সেই ধন,
কোনমতে নাহি জল্মে বিশ্বাস এমন,
আশায় কেবল করি এছণ যাহারে,
হায় কি আশ্রেষ্য ! নারি তাহা তাজিবারে!

ধন্য গিরি-ভহা-বালী তথোধনগণ।
জ্যোতিইয়েরকো, ধ্যানে ধ্যান অনুক্ষণ।
মনোমানে মনোময়ে করি দরশন,
আনন্দেতে আনন্দান্ত করেন ক্ষেপণ,
নিঃশকে তাঁদের আক্ষেকরি আরোহণ,
ধ্যারাবাহী কেই অন্ত পিয়ে প্রক্রিণ।
হায়রে কামরা মাত্র আশাতে কেবল,
রচি কেলীকুঞ্জ, বাশী, রকা হ্যাতল।

কল্পনায় সুখ্যাত্র করি আভাদন, খোলালাল প্রমায় পরিমরতন।

আরম যতন নীর্ণ - শ্রীত-সদ্ধ,
জরা বাহি একেও করিল আরুমণ।
রাজন প্রমন্থ পোষণের জাশা,
প্রায় মন পুর হতে তুলিয়া ছ বাসা।
পোড়া নিষি প্রতিকল, পীড়ার পীড়ার।
ভারতে জাজো হদে ফেরিনাছি পায়।

বিষয় নে নগ চিন্ত থেকে নিষয়,
কার মনে একপাটা না হয় উদার ?
কিন্তু কুছকিনী আনা সেই যে অমনী!
আনান না ভাঙে বামা কি নিপায় করি ?
দেহের মেহেতে আছি হইলা মোহিত.
এমনত নয়, মান হতেতে উদিত,
নশ্বর শরীরি তের গৃহ পতি গায়,
গাঢ়তর অন্তরাগ ছায় একি দায়!
উপাদা যে একমাত্র নিতানিগ্রেম,
মনোমানে একথা প্রকাশে জনেক্লন,
প্রকাশিলে কি হইবে ? বিষয় নামনা,
প্রতিক্ল হয়ে ভায় করে বিভ্রমা।
একিরপ দৈনী ক্লেশ হায় হায় হায়।
বুঝা নাহি বীয়া কিছু কুরা নাহি বায়)

দহন দাহন কেশ কিছু না ক নিছা,
পতকোঁলা প্রাণ্টাকে প্রতীপে পড়িয়া;
না জেনে আমিষ সম্বাড়িশ গিলিয়া,
আবোধ গীনেরদল মারা পড়ে গিয়া;
বিষয় বিপদ্যালো বিষয় জড়িত,
আমরা একথা মনে জানি ভুনিশিত,

পারিশতক হইকে পরিগৃহীত্ব।

তত্ত্ব ভাষা উবজিলারে প্রাণ নাহিলার। নোহের মহিমা কিবা হার হার হার।

কান হুট্মানি : কিন্তু ফ্লার কারণ, কথনই দুটু নাল ক্ষমান শরণ; গৃহিজন গোণা ফল তথা অন্তল, কেনেই পরিছার করিয়াছি নক; কিন্তু সন্তোমেতে পুলি মনের ভাগান, কেন্দ্রল কখন করিনি পরিছার; বাতালপ-ছাম-কেশ সহিয়াছি কত, কিন্তু কল হুটু নাই তপ্যায় রত; ভেবে মরিয়াছি কত করে "ধন ধন" কিন্তু কানি কাই তরু কন্তু নিভাধন! ফলত ঋষিশা বত্যত অনুষ্ঠান, করেছেন, করিয়াছি সকলি সমান, কিন্তু তাঁলানের তাতে ফলেছে স্কল।

যান অজ শক ভল করি প্রদর্শন,
খান বল গানের প্রানায় নিপীড়ন
করিনেওছি, কোষাপোদে উপছত হলে,
খাতে হল ভারা "পৃথুবিগতি" নাম লবে।
আনবাও হতত্বি হলেছি এমন,
করিলছি ভানকরী বিদ্যা আল্লন,
তর রত আছি সদা তাদের দেবার।
থর সম নির্বাদ্ধিতা কি আছে কোথায়?
"প্টিছিভিল্নকটা, ভূবনভাবন,
"
আন্তর করিবা ভারে মনেতে গণন।

বিজগৎ অধীশর একমাত্র যেই,
পুরুষপ্রধান— যার তুল্য আর শেই,

একারমনেতে খাঁরে করিলে নৈবন.
অনায়াসে আজ্বিন্দ করেন অপ্নি।
থাকিতে এমন প্রান্ত দ্বার নিধান,
পুরুষ অধ্যা আছে, ঘালার সমান
অসংখা, নে জন এক গ্রামের ঈশ্বর.
অভাপে লানেতে যার কাত্র অন্তর,
এমন জনেব নেবা করিবার তরে,
ফিরিভেছি অন্থেয়া নগরে নগরে।
হাররে! কি মুর্খ মোনা নাহি কিছু জনে,
মুখত। কি আছে আর ইহার স্থান প্র

হায় সংসারেতে আদি কি কাজ রা করিলাম লোভেন প্রলোভে জন্ম বিফলেতে হরিলাম। রত্ন আশে বত্ন করি, কুপবারি সেচিলাম। হায় হায় কাচ মূলো চিন্তামণি বেচিলাম।

> ভুজ সমিচয় প্ৰন ভক্ষ্ণ, कित्रना मित्रम थाउ।। কাহার সময়, না চাছে কথন. অবমত করি যাতা, স্বতনের পায়: স্থা সমুদায় ज्वांखत जुल मूर्थ, नाहे काल क्लाइ, हा डाट्ड मटखाइ, क्लीएड पुगाप्त स्ट्रा मानव मक्टल, रली वृद्धिवत्ल, रेकना निधि अधकात, এভব সাগ্র, यनि ও দুত্তর, পারে তা হইতে পার। किन्द्र महन्दर्ग, त्य द्वि अर्क्सनः ফেলেছেন পেড়ি৷ বিশি তাহা উপাৰ্জিতে, ভাৰিতে চিন্তিতে WATER COLON THE SAME OF THE SA

- THAT

হনা হন্য ক্ষাগণ। ভয়ানক দরণন
নীদের মুখ সদা নাহি দেখ সভায়।
নিয়ত স্থানিন র.ও., কাছাব অনি নও,
চাট বাকা নাছি কও. কোড়া ছল্ডে বিনয়ে।
পনীদের সাহ্লাব বাব্য জলা বাব্যার
ভোষাদের শুটি সুগ, না করে বাধিত হে
দেজাল্ডাব ভাবিয়ে, আশাব অধীন হোগে
শ্যানে ওখানে সদা, না হও থাবিত হে।
নিছা গাল, নিরা গাও, নব তৃণান্ধর খাও,
স্থানি পায় ধরি, কোথা কোন তথ করি,
কাড়িলে এ.পপ সুথ নেবা সমুদায় হে প

ক্ষাণ অগতন লক্ষ তৃণ মূলাশন কৰিয়া, কীবিত কাল, অনায়ানে কাটিছে। ধনী গালে নাহি চায়, ধ্যকনাহিক ধায়, তার আজা নাত্র নাহি প্রাণপণে থাটিছে। ধর্মদা ধাধীন আছে, দীনতা কাহার কাছে, না প্রকাশ, মদৃচ্ছালাভেতে সন্তোষিত রে। আমরি কি স্থবিচার। শুনে লাগে চ্যুক্তাল, এরা নাকি পশু আরু আমরা পঞ্জিত রে গ

নিজে আমি ভালরপে ভুত্তবাগী হয়ে,
কহিতেছি, এই সংলারেতে জন্ম লারে,
যাতঞা এ পরাভব করিতে স্বীকার,
না হয় কাহার—বেন না হয় কাহার।
হে ভাই, যাতঞা মত সামানা কেবল,
যোবন জরার ইহা থিরারের ছল,
মান মুনি করিবারে মসীস্বরূপিণী,
সদ্ভণশালিতা গর্কা বিদাশকারিণী।
যাহারে করিতে হল যাতঞা স্বীকার,

কোশায় চলেছ ভাই সন্থার ওমন ?

— বেখানে নিয়ত লাস করে ধনীগণ ।

কেন তথা, চোমার কি আছে প্রয়োজন ?

— কোন রূপে করিবারে জীবিকা অর্জন।

যাচঞার ধনে করা জীবিত: যাপাই,

গ ভব গার ডাছা নিশিচত বছন।
শুন ডাই, বলি ডছি ফল প্রার্থনাব,

আগে ডাগে লাভ হয় ডাছাতে নিকার।

বটে বটে পাওয়া যায় পারে কিছু ধন,

টো ধনত ধন নয় ফলতঃ নিধন।

প্রাণের কি কবিনতা হায় হায় হায় !

নুবাৰ কাছায়-হায় ! বুৰাৰ কাছায় গ

কঠিন পাখাণ যদি না হইত প্রাণ,

দেহগেহে তবে কি করিত অবস্থান !

চাই "এই কথা মুখে বেরত যথন,

তথনি করিত তাগে শ্রীরসদন !

যাহোক, আনায় আমি দিতেছি ধিকার

ক্ষেকল মনে কামি জানিয়াছি সার,

তবু গিছে মনে কামি কানিয়াছি সার,

তবু গিছে মনে কামি কিয়োগের ভয়,

"লাই" মকলের কাছে, নাই জানেত্র!

কথালের দলে যথা চকল জীবন
শরীরসদনে তথা চকল জীবন
হার তবু এই গোড়ো প্রান্তর ধাবন,
কৈ কি নাহি কচিলান অজ্যের মতন।
ধনের কণার লোভে যাবা অজ্যন,
লাজ্যা বিসম্জন দিয়া তাঁদের মদন,
আগনিই আপ্নার গুণো সালাপ
করিয়া, সক্ষর কত করিলান শাপ।

[•] শিকার তিরস্কার।

'বিষয় ঘুণার বাস, কি ছার তাছার আশ, मगात गतीत धाङ (धाराण्यात नहा दि! বয়স ত ভারী নয়, স্কুলৰ ছজনতয় সহ পথপরিচয় কতকণ রয় রে ? আজি যায় সন্মিলনে, স্থিত হতেছি মনে, বিরহের ভ্তাশনে কাল সেই বয় রে ! পথিকের যোগ যথা, বলিয়া দুচার কথা, লক্ষ্যস্থলে গলে পরে বিচ্ছেদিত হয় রে তাই বলি এস•সার, নছে কিছু প্রশাসার मीतम, हेशांट मात् किंदूरे ना शाहे (त! क्रित्न अञ्चर्य मात, कता देश शतिकात, दुक्तरात डोठड, मत्यक किंकू नाहे (त ।, এরপ অনেক কথা, শুনিতেছি **যথা** তথা, কহিতেছে অনেকেতে সদাসককণ রে! किन्तु यादेत्रश ताल, कार्ष्क मादे त्रश हरल. অবনীতে এইরপে কজনের মন রে :

ভবস্থ সমুদায় বিদ্যুৎ ক্ষূরণ প্রায়,
চঞ্চল, বিরামে করে মোছ উপস্থিত রে।
যে স্থপ অস্থায়ী ছেন, কায় তাহা তাজি কেন,
নিরমল শম-সুখে নাহও স্থতিত রে।
শুক শাবকের মত, স্পতীক্ষরে অবিরত,
যথন তথন ইছা পাঠ করে যাই রে।
কিন্তু এ কি চম্ছকার। মনোমাঝে এক্থার,
ভাবের সঞ্চার হায় লেশ্যাত্র নাই রে।

ভিক্ষাপ্রাপ্ত ভোজা যাত্র ভোজন সমল,
আয়তন প্রান্ত গৃহ, শহাা ভূমিতল,
নিজ দেহভার মাত্র পরিজন ভার,
ভিত্র কন্তা পদ্ধা মাত্র দেহ ঢাকিবার !
হায় এ থেদের কথা কহি জার কারে ?
তবু মন বিষয়াশা নাত্রে ছাজিবারে

হে উদর ! সাপুৰাদ করি হে তৌমার,
শাকে তুমি পরিতোষ করছ স্বীকার।
পোড়া কদেরের আশা সহত্রে পূরণ,
হয় না,—হয় না ইহা দুষ্পুর এমন !
কিছুতেই পরিতৃপ্তি নাহি জন্মে যার,
কেমনে সাপুতা তার করিব স্বীকার গ

শ্রীন শোকের পাত্র পরিশাম ধাম,
আমেধ্য আশ্রম, ভূতে বঞ্চে অবিরাম,
ক্ষণকাল দেখহ করিয়া বিবেচনা,
কি কি না অবস্থা এর হয় সংঘটনা!
সাপু পদবীতে বেতে অভিলাষ বার,
এ হেন দেহেতে স্নেফ উটিত কি তার গু
বুবিতে নাপারি কিছু কেন কেন ভবে
" আমার আমার " বলে য় করে সবে গ

এদেই কি ? শুক্ত শোণিতের পরিণাম.
সভা আক্রমিয়া ইহা আছে অবিশ্রাম.
শোকের আশ্রয় ইহা, রোগের নিনাস,
কোন কোন দুংখ এরে নাছি করে আস ?
কোন শুনে এসকল অবিবেকী দলে,
ময় হয়ে অবিদ্যালাবণা সিমুজলে,
এই দেহ করে কত রমণীয় জান,
কভু বাঞ্চে কান্তা, কোন, কখন সন্তাম।

বিচারবিষ্ট মুখ জনের নিকটে, এসংসার স্থন্দরতা কতনা প্রকটে। বস্তু বিচারিয়া যদি দেখে একবার, সংসারে কিছুই তবে পাইবেনা"সার।

কে তক করে। লিমী।

(श्रेथम कथा।।

কবিরাজ খুড়ো।

এখন সো দোর কথা আরম্ভ করা বাক। মহারাজ নির্কোণ চূড়ামণি, অত্যন্ত ইন্দি-য়পরায়ণ ছিলেন। কিন্তু তিনি আজ কাল কার বেরেলা বাবুদের মত নিতান্ত লম্পটের ন্যায় ব্যবহার করিতেন না। ঘণকরের একটী ফ্লে মগপান করিয়া তপ্ত হয় না, এফ্লে ওফুল উকি ঝুঁকি মারিতে কম্বর করেন।। किन्हें आधारमत हुड़ायनि, आस्नामीत প্রেমে এরপ মুগ্ন ছিলেন, যে অন্যদিকে তোক ছুলে চাইতে অবকাশ পাইতেন ন:। তিনি আ-इनामीत "रामवल्ल" हिल्लन, उठ वरक्र उठ-তেন, বোস বলোঁ ৰস্তেন, যদি আহ্লাদী তাঁকে ডান হাতে খেতে বলিত, তবে তিনি ডানহাতে খেতেন, যদি বাঁহাতে খেতে বলি-**७ ७८४ ठाउँ ताजि! आस्तानी, महा**ता-জের নর্ন-পুরুল ছিলেন। এমন কি, এক মৃ-**ষ্ট্রের নিমিন্তও ময়নের এদিক ওদিক ছতে** निएक मा। किंख लाशगीत नाम गांव ला হাগী ছিল, সে শশুর বাড়ী আসিয়া এক তি-লের জন্যেও স্বামীর সোহাগ কেন্দ জা-নিতে পারে নাই; নির্ফোধ তাঁকে সোহাপ করিলেড তার মোহাগী নাম সার্থক হইবে ? ত্রীহলাককে আরু লোকে হাজার ভালবাস্ত্রক, मिहिंग कड़क मा किन, श्रामी विक जापेत वरः मार्थि न केल उद्द छोरात शहक मक्ति विकान, कंपनीत स्वामीहे धर्म, स्वामीहे

मकला मुक्रीजीत शर्फ शहरत शूर्कीयां उ হতেও খাসীর পদাধাক কৌমল। কিন্ত বেরেক্লারা অহগতা শ্রীরের আহ্বোনা যে জী. তাকে একদিশের উরে ভাল মুখে দুটো क-থাত করনা, তাও তারা রূপণের: কড়ী খর-চের মত জ্ঞান করে থাকে! বাহিরের বে-ধরক গালাগাল ভাদের গায়ে পুষ্পর্কী বোধ হয়; যরের স্ত্রী কুল বেলপাতা দিয়া পূজা ক-तित्म ७ डांटड मन अस्ट्रेन।। कि जानिम !!! ट्यम मशुत्र करिंदात्र माहि পড़िल, व्यक्ति তার উঠিবার শক্তি থাকেনা: সেইরূপ কুটিলার কুহকে পড়িলে কাপুরুষ্দের দফা श्रीश इनेशा यात्र। योग रेमचाद क्षंट्र करन ट्यार नमी একেবারে তাহাকে উদরস্ক क-রেনা, একবার, দুবার, তিনবার ভাসান দিয়া ভোলে, কিন্তু প্রেমের মাগরে পড়িলে মে অ-ৰুগ্ৰহ টুকী পাৰার যো নাই। পত্লেন কি डॉनंद्य (गत्नम !! डत्र कशांस खर्ग दश ব্যক্তি সদুপদেশের চরায় ঠেকিয়া যায়, তা রই অকুলে কুল পাওয়ার ভরস।। আসা-দের নির্ফোধ একেইত নির্ফোধ, ভাতে আ হ্লাদীর আহ্লাদে একেবারে আটখানা হ-ইয়া প্রতিয়াছেন। রাজা দুয়ার শকুরুলাকে বিবাহ করে দুর্বাসার অভিশাপে খেমন বি-যুত হয়েছিলেন, সোহাগীর তেমন কিছু জ ভিশাপ হয় নাই, আজ্লাদীর গাড় অনুরাগ নিৰ্কোপকে সোহাগীৰ বিয়ের কথাটী ভুলাইয়া দিয়াছিল। যেসন শিশির পড়াতে কমলফ্ল বিজী হয়, সোহা্গার সোনার কমল মুখখা দেইমত স্বামীর জ্নাদরে দিন্থ বিঞী হয়ে পড়ে। খাইজে, শুইতে, উঠিতে বসিতে সো কানীর ক্রোকের কল আবণের ধারার মত প

জিতে থাকিত। তার মনের ভেতর বিরহ
আঞ্জন অহরই হুছকরে জলাতে সে একেনারে শুকারে তলান্তি হুইয়াছিল, সে মনের
দূংথ কইতে একটা মান্তব পেত না। তার
দূঃথের কালা শুনাবার জন্যে নিজের কান
দূটা, প্রবাধ দেবার জন্যে নিজের কান
দূটা, প্রবোধ দেবার জন্যে আপনার মনটা
মাত্র ছিল। জগতে এমন লোক নাই যে মনের বেদনা চিরদিনই সহ্য করে থাকিতে পারে ?
হয় সে বিরলের সান, আপনার মনের কথা
খুলে, নয় পার্মেশ্বরকে লক্ষ্ণ করে কেদে
কেটে বলে। সোহাগার ভাগো তাই ঘটে
ছিল, সে বিরলে বসে চোকেরজলে অভিষিক্ত
হয়ে, যে সকল গান গাইত, পাঠকগণ তার
গোটা দুই শুরুন—

রাগিনী খায়াজ তাল খেম্টা।

শ্রমানর মনে যে আগুল জ্বলে সই,
কেউ জানেখনা।
বন পোড়ে সকলে নেখে, আমার মন পোড়ে
কেউ নেখেনা।
চাল ভলে ছাড়িডে দিলে,
ভিতরে ভাব যেমন জ্বলে
দৈশর দেখে কেউ কথন,

वेशिकांटक का मांदर का।"

भी छ।

" महेरत मांति पिल्डिं!

सरमाष्ट्राये स्टम मना थाकि क्रिटिंड!

रावित कर्णाम याम श्रीकाल मारत,

स्टमाष्ट्राये स्टम दिवसे थाकि श्रीतिर्छ!

यित दिने वृक विति स्टिंग महे जामात,

अमेणिया शोटिंड शृंटण भीटेंड स्मिटिंड!

रमनी जनम क्रीमि क्छ भारत स्मिट्ड!

गटकाष्ट्र कि मांती विश्व द्वार महिर्छ!

সোহাগী এই রক্ষ সময় হ দুঃখের গান
গাইত। ফলতঃ তার দুঃখের পার ছিল না।

যথন কপাল ভাঙে, তখন চারদিক হতেই
কেবল বিশ্ব বিপত্তি ছোড়া ত্রীরের মত পড়ে,
আবার যথন কপালে আড়ি দেয়, তখন কেবল চারিদিক হতে সহক্ষ প্রকার ভালই ঘটনা হয়। কোন সূত্রে যে মঙ্গল হয়, আগে কিভুই ঠাওরা যায় না! ঈশবের শীই লীলাইত
বজে উঠা ভার!

একদিন বেলা দুপুর উত্তীর্ণ হয়ে গিয়েছে. स्राधात द्वारक कार्य कार्य सार्का । दरहान दर-কার মার্থের মত খুরে মরে যে কুকুর গুলো, তারাও আর ঘুরতে না পেরে ছায়ার শুয়ে প-ए रेंग रों करत किंछ मोत्र एक लिए । পক্ষীযুঠ কাকগুলও গাছের ডালে বশে আ-লু সেকুড়ে মানুষের মত ঝুম তে লেগেছে। এই সময়ে অতি দীন দরিদ্রেও একমুট শাক भेरका या जुरु अस त्राहे स्वा। किन्न सा-ছাগীর পেটের আগুন অমিই রয়েছে ৷ পেটের আঞ্জন হতে বিরহ্ আঞ্জন বড়! যার মনের মধ্যে এই আগুনের একরতি ফিন্ কুটী পড়ে-ছে, তারে কি আর কুখানলে কাতর করিতে পারে ? সোহাগীর ক্ষিথে তৃষ্ণা নাই। কেমন ধারা স্বামির মোহাগী হব, কি কলে পর স্বামির সুনজরে পড়তে পাররো, এই ভাবনাতেই তার থাবার দাথার বেলা চলে যাচে, তবু তার খোজ নাই।

এমন সময় সেই কবিরাজ খুড়োর ঘ্নের চঁয়াডারা গোয়ালিনী উপস্থিত। দেখে কি সোহাগীর চোকের জলধারা বেরে পড়তে লেগেছে। দূর হতে দেখুলে বাধ হয় তার জার প্রাণ নাই, যেন জাকা হবৈ একথানী। भाशालिमीत आर्थ आर्थ आर्थ आहांगीत कारक যাতায়াত ছিল, সে সোহাগীর দুঃখের কারণ জানিত। তথন তার সেই অবস্থা দেখে গোয়া लिनों वर्फ ममठा इल। आपत करत विलल "ছোট্রাণি! এমন করে রইচো কেন ? আহা! তোমার সজল নত, মলিনবদন দেখে যে আমার পরাণটা বেরো বেরো কচেছ! আহা সতালক্ষ্মী ক্ষ্মীর ভাবনা ভাব্তেঃ সোণার महोत्रहेरिक 'अककारन कानी करत रकाल ! छ-বুত রাজার দয়া হয় না ! তাঁর চোক থাক্লে-তো! মা! তুমি আর কেঁদোনা, পরমেশ্বর এতদিনে হোমার প্রতি প্রসন্ন হয়েছেন। আ-মি এমন এক ওয়ুধের খোঁজ পেয়েছি যে, সে ওযুধ খেলে পার, রাজা তোমার কেনা গোলা-ম হয়ে থাক বেন। আমি কাল সেই এয়ুধ। তোমায় খামাক। করে এনে দেব। সে বড় থা। जाक अगूध, मकालई थाएँ।"

এইকথা শোনামাত্র সোহাণীর যেন হতপরী
রে পাচপরাণ এলো, হাতে যেন আকাশ পেলে। একেইত দ্রীলোকদের টোট্ কা উর্প্রেথ
অচলাভক্তি, তাতে সোহাণীর স্থামির স্থপ্ত
হতে যে রকম আগ্রহ, গোয়ালিনীর কথা বেদ
বাক্যের মত বিশাস হল। সে চোকের জল
পুচে, ব্যথ্র হয়ে বলিতে লাগিলো, "গোয়াল্নি! তুমি কি সত্যি বল্ চো, ? মাথা খাও, না
না তোমার কথায় আমার বিশাস হয় না, রুঝি
তুমি আমাকে সাজনা করেচো " গোয়ালিনী,
মা, ঈশ্বরের দিঝি ! আরাম ! চোকের মাতা
খাই, আমি ঠিকই বলেচি। কালই সে ধন্নস্তরী
ওম্ব এনে দেব। ওম্বুধ আমার পরক করা।
খাওয়া মাত্রই রাজ্যু হাজার কাজ ফেলেও তো
মার কাছে উপশ্বিত হবেন।" নোহাণী " না,

मुखि! (मृ अवृध क्यान कर्ल इति ? यकि ৰাজাকে খাওয়াতে হয় তবেইত বিজাট : তিনি কি আমা পানে ফিরে চার্ধ না আমার ঘরে একতিল ব**দেন, যে ওবুধ ধাও**য়াব ? त्तीशानिनी " ना, ना, अरूथ जात्रादक त्थादक হবে।" সোহাগী, "তা হলে যাহোক, আমার তাতে কবুল, যদি প্রাণ দিয়েও প্রাণেশরকে পাই, তাও আমার ভাল " গোয়ালিনী, " তোমায় আর প্রাণ দিতে হবে না। ওযুধের গুণেই রাজা তোমার হয়ে পড় কেন। এযুধের অসাধারণ ক্ষমতা ! মেনকার ওয়ুপের গুণে শিব পার্বভীকে বুকের উপর তুলে নাচাক্রম, জান ? সোহাণী, গোয়ালিনীর এইরূপ কথা ভনি-য়া কছিল, তবে এখনি ওমুধ আনিয়া দাও ? भाग्रानिमी कहिन, " এठ উडन देश मा। এই আমি ওযুধ আনিতে চলিলাম ৷ ওযুধের माम हाई।" माहाभी निश्वाम हाजिया विलल. "আ অদেষ্ট। আমার কি আছে, যে দেব, আ-মি রাজার রাণী হয়েও কালালিনীর বাড়া হয়ে-ছি। এখন আমার একটা পার্মাও দেবার যো নাই। যদি ওবুধের গুণে কথনও স্থানি-র সোহতে পারি, কবিরাজ্ঞাক, আর তোমাকে या दिनां डाइ दिन्दा।" दभावालिनी, आका তাই ভাল, বলিয়া আমাদের কবির্জে খুড়োর কাছে চলিয়া গেল। সোহাগী, তার আদার অপেকা করে চাতকিনীর মত চেয়ে রইলো। रगोशां निनी यूटफात काटक साहागी, मगू-मग्र कथा शूटल तथाल दिलल, शुरकांत अनूद মচলবিশ্বাস। অমনি হাঁ বলিয়া আপনার ञ्लिखा मार्ट्स्व होष्ट्रश्रूकृत, मकल द्वा-र्गत अरूध नय, मकल अवचा द्रमाधतीयोत क-প্ৰতর ওয়ুধ। খানিকটা দিছে, খেমনং क

রিতে ছবে, সর্বলে দিলেন। গোরালি-নী ওপুথ লইয়া সেই মত সর সোহাগীকে বু-বিয়া ভবিয়া দিয়া বার্টী চলিয়া গৈল।

ওব্ধ পাইয়া সোহাগীর সাহস বাড়িল। ক তক্ষনে রাত্রিপ্রভাত হয় এই দেখতে লাগিল, সারারাত ওচপাচ করে জেগে রইল। কথন বা মনে করে, ঠাকুর করে ওয়ুধের জোরে একবার স্থামির কছিছেস হতে পারি, তবে তাঁর কাছে কেনে কেটে কোন মতে একটুক দয়া ভিক্ষা পারই পার। তিনি কি আমার দৃঃথে একটুক-ও দুঃগিত হলেন না ? অবিশ্যি হবেন। আমি একবারে তাঁরি গলা ধরে পড়বো। অভিমান করে প্রথম কথা কননা। না না তা করা হবে না। কি জানি যদি চটে যান। আবার মনে করে, যদি এবার ওয়ুদ র্থা হয়, তবে আর এ প্রাণই রাশ্বোনা।

এই রকম চিন্তা করিতে করিতে রজনী প্রভাত হয়ে গেল, কাক সকল কা কা করে উ-ড়লো, মুরগীরা কুকুরু, কু শব্দ করে প্রভাতের সংবাদ প্রচার করিতে লাগিল। সোহাগী এ-কেই বাগ্রা হয়ে ছিল, প্রভাতের মুখ দেখেই খুড়োর ওয়ুধ ধন্নস্তরী বলে সেবন করিল।

যত বেলা চড়িতে লাগিলো, সোহাগীর
ততই দশন্ত হতে লাগিল, একেই বিরহে
ক্ষীণা, দীনা, মলিনা, তাতে পুর্বের দিন
অনাহার, জোলাপের ওয়ুধ ভয়ানক রকম।
সোহাগীকে একবারে বিছানায় ভইয়ে ফেলিলা এক২ বার দান্ত হয়, সে মানু করে এই
বুঝি রাজা এলেন, কায়ো পায়ের সাড়া পেলে
ভর্মা পায়, আহার তা ভ্রম জানিতে পারিলে
আশার বাসা ভেঙে যায়, মন্ম বেদনার র্ভি
ইয় বিশাহাগী প্রায় সা প্রহর পরাজ্ঞ এই

রূপ আশা আহ নিরাশার সূথ দুংখ তো-নিল, ভাগো রাজদর্শন ঘটিয়া উঠিল না।

এমন সময় রাজার একজন দাসী কোন কারণে সোহাগীর ঘরে আসিয়া দেখে সৈ জী-বদ্মত প্রায় বিছানায় পড়িয়া ওমুধের ফল ভোগ করিতেছে! তখন দাসী সোহাগীকে জিস্তাসা করিয়া তাহার সেই অবস্থার কারণ বুঝিতে পারিল।

দাসীর মন তথন সোহাগীর পতিভক্তি দেখিয়া, দয়ায়নালিয়া পড়িল। সে নির্বোধের নিকট বাইয়া এক ধোঁকা দিয়া তাহাকে আন্ ইলাদীর নাম করিয়া বলিল, "মহারাজ চলুন, আপনার আহলাদীত ষায়! তারি অসুথ, যদি দেখতে চান, শীঘ্র চলুন "নির্বোধ এই কথা শুনিয়া অমনি তটস্থ হইয়া অন্তঃপুরে যাইতে উদাত হইলে, দাসী তাকে সোহাগীর মরে লইয়া গেল। নির্বোধ আহলাদীর অসুথ এই কথা শোনা মাত্র একবারে আকাশ দেখিয়া ইতর্দ্ধি ইইয়াছিল, সোহাগীকে, আহলাদী ঠাউরাইতে না পারিয়া বলিল, "আহা! আন্ মার সোহাগিনী এমন হয়েছে! আমার অ-দেই মন্দ।" এই বলিয়া সোহামীকে কোলে লইয়া বসিয়া আক্ষেপ করিতে লাগিল।

নোহাণী আমির এইরপ কথা শুনিরা মনে করিল, ঈশ্বর বুঝি সদম হলেন, ওবুরের গুণ এতকানে ধরিয়াছে। নৈলে যে আমী এতদিন একবারও আমাকে মনে করেন নাই, চোক জুলোটান নাই, তিনি এককালে আমরি জন্যে একন অহির হয়ে পড়বেন কেন ? যা হোক আমি খানিক চুপ করিয়া থাকি।

(कमनें थकानें)

হতভাগ্য শিক্ষক!

(शहनमा)

প্রথম আরু। প্রথম গরীক

পল্লিগান- আতাইগঞ্জ। প্রবেধিচন্দ্র শিক্ষকের বাদা। প্রবোধ একান্তে আলীন।

প্রবেগ । (স্বগত সংখদ) হা ঈশর ! " টে কি
সার্লে গেলেপ্র মান ভানে। " আমার অদ্যেট তাই
সাইছে ! বল্প নাজন, আতি কুটুর সকলেই আনে
আমি বেল সাথে আছি, সাহাযাকত স্কুলের শিক্ষক.
ক টাকা বেতন পাচিচ, এলিকে যে " নাম গোরালা,
কাঁলি ভক্ষণ " তার পোত কে রাখে ? আমি যত সংখ
আহি, ফ্রা আমি আনি আর পরনেশ্রই আনেন!
অথবা আমার মত হার অবস্থা সেই আনে ! কত্তিন
ধরে বাতীর চিঠি পার পাইনে, মন ভারি অস্থির
হচে । একেইত টানাটানীর সংসার, হরে রক্ষা মা,
নবপ্রস্থতি স্ত্রী, ছেলেটকে নিয়ে নাজানি কত কটেই
শালে । আমি নিতাক মুর্ভাগা ! পরিজন প্রতিপালন করেও অক্ষম । আমাব ভারনে দিকু !

[नीर्धानवाम जान।

मशादलत প্রবেশ

আস্তে আজা হোক। কবে এসেছেন ? অনেক ক্লিনের পর সাকাৎ——"

দরান। আত্তই ও আনে আনা হরেছে; রাম কুষার বাবুর কাছে কিছু প্রয়োজন ছিল। তাঁর ও থানে শুনুনাম, আলুমি, এথানকার স্কুলের পণ্ডিত, ভাই ভারনাম, একবার বেশাটা করে যাই। প্রেরোগা। আনার মেডিগার, বে এমন ক্রছারে থেকে আর এমন কুচাকুরী করেও আপ্রাত সাক্ষাত পে লাম।

वकालके यहनन कि मनात । आमरा किन्नाइक महकारत फ्यांनानाती श्राप्त क्यांना कांचा करित के -यहा वर्षे क्विनित श्राप्त कांचा क्यांना कांचे थे-शिक्षा मक्ष कि सात हर्षत कांच्यों आहा ? मांचा मांचे शिक्षा माहे, मांचा माहे, मांचा माहे, फ्यांना माहे, फ्यांना क्विन विमान्निति, क्वांनक्कींग साहित्य, मांगर म-तकात हर्ष ३० वेका विक्रम लिक्षित । मनकः लिक्ष केका वर्ष प्रश्येत कर्ष ! निकाल श्राप्ता क्विष्ट बांचे । वर्ष्ट विद्यानारकता लिक्षकका कर्मात श्राप्तमा महत्व विद्यानारकता लिक्षकका कर्मात श्राप्तमा महत्व

আবোধ। মশাস, যে শিক্ষকজার আলংলা কলে। আমানের ভাগে। তঃ ময়, আমানের কর্ম, মুজরী দ-তেও স্থািত।——"

লয়াল। বজেন কি নশায় । আপনাদের তুল:
ক্ষী প্রায় আরু দেশতে পাইনা, তবে কি না, আ
শালা ব্যন প্রিজন করেন, সেই রূপ বেডন পা
নান। ১৫ টাকা। এডেই বা বলেন।

প্রবোধ। মশায়! যদি সময় মত এই ১৫ টাকা শেতাম, তা হলেট মধ্যেট কক। তা বত গাই——

দয়াল। কেন ? আপানারা হচ্চেন গ্রথবেন্টের চাকর; বিশেষতঃ এডুকেশন ডিপার্টনেন্টের। আপ-নারা মাসেই বেডন পান না, কেন্দ্র করে! বরং জঃ মন্ত্রা জনিদারের মধ্যে চাক্রী করি, আফালিনের বর্টে মুসার অনুসার দেশতে হয়।

প্রবোপ। বোধ হয়, আশুনি দাছবিত্ত ছ। লের নিয়ম জানেনন।?

করাস। মোটাগোলী জালা আছে। স্থানীয় লোল কেরা যত টাকা তাঁদা দেন, গুবৰ্ণনেউও তাত টাকা নাহাব্য করেন, তাঁর পর ছাত্তবেতন আছে, তা দিব। आहे. थतर हरन शास्त्र। এই निष्णुय मा नाहायक्र अन्य शामित इस

श्रामा। व्यापनात स्टूबन कछ होकांत होना! बाटनान। २० ठाका!

ं नशंता। (जिनियास) अब् जन्म! अ आहम छ छारमक मस्य मानूय तरशर स्मा, अँदानं स्थरमदक्षे वि-जिरादशादी बरान शिशक मिरत शिक्सा।

প্রায়ের। এই চান্দায়ইতে ভার **প্রায়ের পাচেন,** জরপার যদি এই ২৭ টাকার ভিতরের ধবর পোনেন, শোধাকু হয়ে পাত্রেম।

महाला। ८७७ तत थनत (कमन १

প্রানাগ। শুনুন বলচি। প্রথমতঃ এই প্রামের করেকজন মুখসর্কত্ম ক্রিকজন ক্র কাপনার উদ্যোগ পান, এলা একত্র হতে বিলক্ষণ উৎসাহ সহকারে এক সভা করেন, সেই সভায় এই প্রামের সকল মহা শারেরই আন্মেন হয়, ভিপুলীইনেক্ষেত্রর মহানায়েরও আ্যা হয়, সভায় বিলাশিক্ষার উপকারিতা, জুল স্থাপনার আবিশাক্তা, চাক্ষা নেওয়ার কর্ত্রাতা নিয়ে এয় ২ বাক, ভা হয়—

मग्रांस । जांस श्रे ?

শ্রবাস: তথন সভার উপস্থিত সকস বাজিই উৎসাহে পরিপূর্ণ, হার হা ইচ্ছা চান্দার বইয়ে স্বাক্ষর কর্লেন, একনারে চান্দার মাস্কি ৪০ টাকা দাতবঃ স্বাক্ষিত হল। ডিপুটা বালু চান্দা দাডানিগে
প্রশংসা করে গন্যবাদ নিলেন, আন প্র পরিমিত টাকা
করণ্যেন্ট হতে আনুকুল্য মঞ্জুর করামে দেবেন, অক্রীকার করেন।

দয়াল। ভার পর।

भारतीय। তার পর চাজা আনমের নিম্ত-"

श्रादाध। जुल घर आह त्वक हेन नवन हैन. गृहिकहाक होते।

. महोता छोत बहुत योब्।

श्रीरगंग। के ल श्रीणनांत श्रीम उत्नागीता होन्स आमारत श्रीत्र हतन्त्र, मुख्य श्रीम अत्मान माणिय धाना निष्ठ श्रीणत करतम, किन्त त्मवात समान करे या छ। वार्षिक क्लालन, किन्न वा श्रीणरहत अनिक किन्न निष्ठ धकवारत होना हर्छ नाम थादिस करत मिटलन।

महाल। (मृविचारश) ८८ । जात शत १

প্রবোগ। প্রার্থিনবারে গতে ৫০ টাকা উঠুলো, তাই
নিয়ে ক্ষুলের ঘর টুল, ব্রেঞ্চ, প্রায়ত করান হল। ডিল
পুরীবারু ২৫ টাকা বেতনে একজন ম্রেফ্টর আর ১৫
টাকা বেতনে আমায় পণ্ডিত নিযুক্ত করে। পাঠালেন। (মজন নয়নে) মগার, এই লুখের পণ্ডিতী
নিত্তেও আমাকে কম কন্তাভোগ কত্তে হয় নাই।

महान। रक्मन! आंश्रीन मा मर्पालक ट्लंब था-थमटबारीट अंश्रीट माणि किक्ट शिट्याहिटलमू, छहम-हिलाम!

धारवाथ। यणात्र, अथमकात निर्म मा विक्रिकिटे हरण जेशारवाद रणात्र रणाता। जा वारहाक शिक्ष ज हरत काम। यणमूत माथा, श्रीतक्रम कृत्र हाज निर्म श्रीतिक नागनाम, दूसाम श्रीत ग्रावश्यको २६ होका मार्थाम मञ्जूत करक्रम।

দর্শি। কেন ২৫ টাকা যে গ চান্দায় না ৪৫ টাকা স্থান্দর হয় ?

প্রবোগ। মুলায়, স্থাক্ষরের বেলায় অনেক্ষে পাওরা যার, কিন্তু "ব্যাও ধরবার" সময় স্থানেকেই পেছু হটেন, বারা এই ২৫ টাকার চান্দার রইলেই ভারের নহিমা শুরুন ও।

मत्रांत । वलुम दम्भि ।

धारताथ। गर्नात्मा के निवस करे, चानीस लाखन

का मक्क करत दिन चारम, उटन ठीका शांवका त । এशंककात ठीमा मीरमर आमात र उन्ना मुक्क था क, अ 8 मारमञ्च शक्यारमतं हान्ना व्यक्तित दश मा, तियांत छेश्टतत माखेत बर्ह्मम, डीटक माकि एउश्री ार करलिरस्टइम, छोम्। अपनीय मा बरल अ स्टस्ट्रफ. क्रम श्रीकात करत विमालत्थ मोठोर उ रव। महुवा 'दल्ह्म्टलेंट होका शांख्या यांट्य ना। 'आयता निहन Par निर्ध निर्क कांत्र कहारा-

प्रशास । मनाश ! क्ये स्ट्रिम 🚜 এए এक श्रेकार मालनारमन भवन्दमन्द्रेरक ठकाम दर्गन।

প্রেরাধ। ভার সন্দেহ কি ? মশায় মধন প্রথম এইরূপ স্বাক্ষর কর্ত্তে ক্ষম ধরি, তথক যে মন কিরূপ ृ:थिः करयहिल, छ। जनमीश्वत्र कारमन। कारकत हनम कांत्र हटलमा! जामता शेल हटल अभग,-शा-পিঠ, জেনেশুনে প্রভারণায় লিশু ছলেম! কি করি :भर्षेव नारत मक्ति खीकांत ! अथन भ्रत्रार केत को डता, आंत्र कां जात्मत त्वकनहे आमामिरभे की बाना-भाग ।

महोता। इतिरयजन कक आंमाह रहा ध्यदर्गशा डोक् प्रमा

महानु। ७८व स्थम व्यापीनाटमत खुटनत २६ होक। দরকারী দাভব্য, আর ছাত্রদের বেতদ ১০ টাকা, মোটে अर डेक्नि अर्छ, मोखोरबर तिजम २६ डेक्नि लिटन वाकी ষাকে দশ টাকা। আপন্সি মানহ এই দশ টাকা পান 🕫

ध्यरवाथ। छाइ देक १ छाउरमत्र दवजरमत ६। ६ के कि कुरलंद नारकथंद्र वाहा। ६ कि 😼 के का नाज পাই, সত্তে একটা চাকর, বাসাভাজা আছে এতে কি कबटलांटकत त्रीवीत ?

मञ्जाल। रक्न, ना एह माछोत्रवाद्धक २० छोका नियं, जाशनि ५० निय्।

क्टबांव । 'कांत्र त्या, कि । कामि होक मीटहर गोब्रावराष्ट्र राज्ये तथे। जिति सांबह-

व्याहः आहोष्ट्रं करत दिल शोठीरन श्रव मार्थारकात्र | देवीत होका आमार्थारको आर्थान आर्था आश्वनाति क्षिति तमन, क्षांत कामारिक हान्या कामात्र करह दरकम सिटक नटकमा ए क्रीअस्मक देवकम् केंद्रि करिए समा क्रम जिनि कोनगढ महनाही होना मा शाउँम नैपास उद्दित्य वामाधक देखानि छालाम । स्माप्त माथि castate (हारहत हारहत । कामारकहे चत्र हाम्पा সাধতে খেতে হয়, কি কৰি পেটের ছালায় ভাত খী-नात! किक रगटम अमात माहै। योश बाहेटर बेला विटलांश्माकी छात्मात बहेरत शिटमत काटक ६०। ६० । डोका डाम्मा वांकी बटबट्डा डाँटबत काट्ड ५०। अंत निम अपनाती करत २ के को आनाम करा की किता (मधून का कांगीत रहे, कछजारनुत माम गांकी बाहर टमटक शादन।

विष्यांत वेदी खनाम।

मधान । (नहीं अबेका भाक) जिल्लानां वांशवहत्त्र ८७ धुती,---मानिक ॥० व्यामा, वाकी २० छ।का. अबुक बांब हामक्त मूर्थमां, मानिक काना २ केका, नानी 80 डेकिं ——- डेमि म!, अनुष्म फिशुफी डेटकटच्याहेन ? अब कार्ड अख्वाकी।

व्यटनाथ। दमर्थ योग।

महान । शियुक्त डेवाह्य भाग दर्डमांखे त - यांगिक होना ३ हे का, वाकी २० हे का। इसि अड वाका (ब्र-स्थरहम ? कि आंक्ष्यां ! हैनि अवार्तन मारम व है। ह। न. निष्ठ शीद्रम । जिथुक त्यांच्यमान नयः, त्यादराखानांतः, ्क ? असम प्रशांनुभूकर अधारण कार्र्डल ?

व्यटनोध । मनाप्त होनि कृभिक्षोत अञ्च कानांनराज्य त्मरत्रखोषात्र, हेनि नर्फ महालू शूरुव, वह कार्ट्स बहे अ-जिम डोका পरिशोध थानात गढ लूंकात राफी पालश इह, टेमटम मध्यमदंतर भन्न देव भन्निवादंतर महिल्ली बक्दान माकाछ, खांत रत्या द्वित रखाः

FRIO 14444 7

निक्षण जकरवर्ड विलेशकर निरंधम, बांक कर्तन कर्णाय वर्डी उपित्रिक, त्यांचे पाँठ है कि कार्याय कहाय. अपने कर्णाय मिल कर्णाय करण कर्णाय करण कर्णाय करण कर्णाय करण कर्ण

जहांन। कि कृष्य। शृक्षात मनस आधारित हाकत देवराजातात 80 । ६० है कि किएस वाकी यात । आर्थिन अमेर कथा जिल्ली बावुएक बरतान मा किम ? कामाज ना रूप वर्षाम दर्शम । अकुल शिटिंग व्यवस्थ कजिन (द-गांव भोडेरवम ?

শাসেক পুরার এতারে কর্মী পোঁছে ২ । এ টাকা থরচ করে
নিচ্চাক পুরার অভ্যান্ত কর্মী পোঁছে ২ । এ টাকা থরচ করে
নিচ্চাক্তির কাছে গোলান। সলব স্টেনেলে যেয়ে শুনি
ভিনি বাড়ীতে গিলেডেম, নেখান হতে হেঁটে শুর
নাড়ীতে গোলাম, গিলে জাঁকে কেনেকেটে সকল ছাথের কথা বল্লেম, তিনি চানানাডালের প্রত্যেবক
নালেম ১ । ১ খান চিঠি নিবখ নিলেম, জামি সেই চিঠি
গুটানকে ইতীকবহেজ্য লাখ গলায় বেঁগে ছালে এলাম।

श्राद्याय । जिल्ला जिल्लामात् यात्मान काट्ड विकि जिल्ला मिन्नोजित्ममा, काँग्लान काट्ड मिट्स शामान, विकि लिला, टक्के वा २। ४ वेकिंग मिटममा, टक्के वा स्माहे मि चिट्ठ बेटम वेजिल्लामा, टक्केवा बदलामा, कामान ट्यान अथम अञ्चल भटलमा, कामा स्माब टक्स । टक्के वा कांत्रि कटके किंद्रसमा।

प्रशंत । बर्फ वांश्वं करें।

, मग्रांस । जांद्रश्व १

कारकाथ । ट्राइट्स्स मा, आणि ट्राटमस मारम छि-पूरी मंदर माटक रणसा करतक, गरस छोट्सस, रूडे स्मारक २ प्रदेश "व छिटियांसिक समान सिमारस अखारोतं नतः त्यं छात्रम खाँगित ना कार्कः मोनांगा नीलांगं स्टवं। सान कता हेन्छा, एवं कत्रनामः मा र ना कतलामः এक सबै जुलाहत्वभ कि ?,,

দয়াল। মণারের কথা গুলে আমি একবারে হা মুদ্ধি হরোছ। ছারা পয়সাকে এত ভালবালেন, ভাঁর প্রাথমন আছিও করেন কেন? প্রতিজ্ঞা করে পাল না করা যে ভারি অধ্যাত।

প্রবোধ: মশায়, প্রকৃতধর্মজ্ঞান কাউ অপ্পন্নে ক্যে আছে, প্রকারে মশ কিন্তে, মান ফাটাডে অ নেকেই মূর্ডিনা

पहाल। ভবে आश्रेनात हिशात है

আবোষ। (দীর্ছ। নিশাস তাগি পুর্বক) আ
উপার, বাড়ীতে যা কিছু ভিল, এবংসর পতিওঁ
করে আয় সকলগুলি ধংস কর্লাম। বল্লে কে এা
ভার কর্বে? ২ বংসরে আমার বেতল হল, ৬৬০ টাকা
ভার মধ্যে ৭০ টাকা মাত্র পেছেছি। এতে পেটের
ভাত পোঁলের কাপাড়ট হওয়। ভার, ভারতা রক্ষাত
পত্তে মককী। আমানের অপেকা আপনার। সহত্র
গুবে কুপে আছেন।

দরান। ই এ জবস্থার সঞ্চে তুলনা কল্পে আমর। ভালই আছি, বোধ দয়। বাহোক আপদি অন্যত্ত কর্মের চেন্টা পান। কোন ভানিদারের মধ্যে কি কোন আফিলে—"

श्रीवा । यणांग्र, द्वासीत आंत्र ज्वासे कृति नाहे,
गंठ (कार्यमाटम अधानकांत्र फिश्रीने माजिटद्वेदित काकिटम अकी ४ मेका दिखानत क्या थे जो हम, फिश्रीने
माजिटद्वेदिने हेरतांच हानक मर्थाय जामादमत कुन दम
गंद आमहत्त्वम, फोटफरे दांत्र मंद्रच आगांत श्रीति १ स्था। कामादम किनि द्यार कररूम, के क्टब्र करणां

महोत । हाट फिश्री माणिट हैं कि बरसम है। संदर्भ के किलि कोग्रोह क्टब्र बरसम, क्रिन क

MICHIE . THE COST WHITE TO मंब्रदांबूत योजयशहेलांड सहित्रदी कर्ती अपनि बहा, क्यारि डांव संक्रिकेट करायेंव आषित जरमय, रिजनि रहमसं, THE STREET WESTER STREET, STRE मात्रा, मात्राम, कड किए छाडे, क्या विशे कर की क हंत्रा करिक, विरोधन कृषि कर्ली केंद्र किया (वास्त्र शांटका विर्मा) मारतिके रेकिन एक र केकिन 30 केकिन किए प्र के काम बहुब किन । " दिखे की शहर बच्चान माइटकर . नहि नत्मिष्टिनः तिमार्कान नाल " कि अन्ति पेनाव । तित कुमा क गार के। कि कि का कार्य अध्यक्त क कार्य के किया कि कित्राया। देव THE BOTH WHICH IS A STATE OF THE PARTY OF THE PARTY

महान। कि करों। का निकार द्वार देवार रीका नाहि। ''मुक्क कार्रम कार्निक के हे है है । देवेक मान्य, : रेमें की महि नटर के है। को ७ शटकमां। " की जावाद क्रिकंट ने " क्षेत्रती जरमें की देश शांशनीत नारह बाब गाँव-

ना देशदेशदेशक माफी क्यान मंथि

The state of the s

CATE A TAR

THE STATE OF THE S

सर्विक क्रिक विभिन्न कार्क वारक न अस्तु एकत

सर्वाम । (बनाई) विश्वा सह कि त्रि । नारखा कर्ता अभिनाईस वादेशभानिक खांक व्याहरू कि कि किहा हर मोनाना है, जामाहरू कार देशक बीनात का जाशरन है मान प-

भार काहर काड जान

MESTATI TO STATE

The state of the s

and least to the same of the s

विश्वका नकेशा कानात्व शुर्वक केट काम गर्वाक

হিতীয় গভান্ত 🜬

असर्गा समह राजी ।

श्रीत हमा जो स्थीन निर्म गरान-के कि दुसाए अस्त्री श्रमान्त ।

ति विश्व कि कि कि कि विश्व कि

TO PROSE TO STATE OF THE STATE

107 (44 fg 44 fg 4

शारादवी बाठात शहरन।

बाउ। तो, तो। काल त्वाबत्यत नाडीत क्षांक बाढाईगडा बाज धामारक, क्षांतात क्रींबात क्रिकेटल-एक्टक, तो उत्ताव लाहित्यत्य। यत, क्रिकेटबी नीत्रत्यां मा, त्वाबन्यत्य करन लंडाबंदी क्रुडाई। श्राद्यांक काल

(अब श्रमान धनः दर्गीकाटक (काटड़ बद्द्य ।)

AND THE STATE OF T

ence a les céres par mon e l'anne de la compara de la comp

ermini, minie sie anni victu (and februarie) in februarie, ministration (and februarie) in februarie altre a

त्वातिकः। (कार्यः) जात्य भाग्या कार्यः हेकि त्वात्वकः १ अवन्यस्य स्थानकिकाश्यकः नामास्य स्थापः स्मानस्यः

प्रकार के निरम्भ लोगात के ग्रेटिन के ग्रेटि

ANTONIO (METERICA PER A MINISTRA B. M. ALGARIA: ANTONIO ANTONIO ANTONIO THE R. M. ALGARIA: ANTONIO ANTONIO ANTONIO SCHOOL MINISTRA PROPERTY ANTONIO ANTONI

The state of the state of the state of THE THE PERSON NAMED IN COLUMN मिन द नगरामान नामा किन निक्रिका) है प्रतरक सार केलि मेरा त्यानामा प्रतर मनके जन क्स, इंटिंकिए दार बाइमें, देविश कि जिद्रशृह रेक्टिक किटिक भए एकि, मी, भीएक महत्र मा जेड जामक कान किए किएक किए महि, देवांत मन भागाह शहन नद शुँल लिएक

श्रीतिशाहि, स्टार्शन अर्जाते भेजारि ने निम्ह । अमा नह निश्देशक दिस्त विस्त और, इंग दिल्ला क का सनिया कारता आर्थित व

the design and straight of Confessor and Confessor to the के के विकास के लिए कार्य मिन के कार्य के किया है किया है जाति है किया है

विवादि स्वाप्ति एक विवेद साहित कतियाः विक्रियां (वे क्रीकृशाली लासादेकात म-नक्ष अविद्याचि : किसंश्वाका शहर नरेतांडि. थीं। श्रीका विश्वित्तातः सामानं न राज्यक কিলিয়া গোলাকে, অভিন হইলাছি, তুলা জ मुक्ति क्षेत्रमा क्रिया कि जिल्ल श्रीश्रा किशाहि। श्राजिकान्दे जाना करम, अकृतन केलि द्रभणिकेट नाहिन, पश्च हित्ती अपूर्व विकेत, जाहे विका समा अवस्था गरिए, धन प्र- कडिएक बीमधी गाँउ हरें हो। बाब, विजू हे कामक नाहिका । का वाक नाक नाह কেৰ্মতে তাই দিয়া গৈড়া উদ্ভৱ পাহি-CONTRACT TENTS TO THE TENT OF THE PERSON OF कार के ट्रिकेट नार्ड, जागांड पूर्व न-उर्देश केट संस्था करें हैं। भेरेश एक क्रम्बंड क्रांच कति, स्थान क्र फिन क्रिया गाँड, क्रमान बंदम क्रम अस्ति TE TEST WHEN MINISTED THE THE STEEL STATE OF THE STATE OF and it cased there is no section. THE THE WORLD

স্বুট্র ছবি আয়াকে সজল নয়নে বে উপ-দেশ দিয়েছিলে, আয়ার মনে নিরন্তর তাঁছাই জাগরুক রহিয়াছে। বোধ হয় শীঘ্রই আ-মাকে সেই উপদেশাস্থায়ী হইতে হইবে। অধিক কি লিখিব আমি ভাল আছি। স্থযোগ পাইলে বাড়ীর সবিশেষ সংবাদ লি-খিয়া চিত্তভির করিবে।

ভোষার

श्रीथरगंधास माम।

দুলীল। যাই, তবে একধান উত্তর লিথে র'•

শিগে, শুনেছি কালই প্রাত্তকালে ঘোলেদেব বাজীর
লোক জাতাইগঞ্জে যাবে।

[शक्ता

हे जि ध्यथमा है।

বসন্ত বর্ণন। অন্তার্থমক।

भाइताक वमसु, महिल मनवन।

प्रतित्वन हिम्दुर यह प्रन वन॥

प्राणितन ज्ञवमीत मन ज्ञिनिकांत।

प्रहारिक स्वक्रम, धिक्रम ध्रका।

ध्रकात भवक्रम, धिक्रम ध्रका।

ध्रक्षात भवक्रम, धिक्रम ध्रका।

ध्रक्षात भवक्रम स्वत्वा मिर्छ वात।

विभिन्न क्रिम क्रिम, क्रिम निर्छ नाव॥

वैश्वित्वन मनक्रमाथ निर्म मिर्छ नाव॥

वैश्वित्वन मनक्रमाथ निर्म मिर्छ नाव॥

वैश्वित्वन मनक्रमाथ स्वाणा, कर्ड वाम लीत्म॥

प्रकृति कारम स्वापक स्वापक स्वापक प्रमाजन ।

प्राणिक स्वापक स्वापक स्वापक प्रमाजन ।

प्रति भारम स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक ।

स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक ।

स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक ।

स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक स्वापक ।

बिटलम तमखत्र क ^क ८ श्रम **अपूर्वा**टण 🕶 🛭 मधुकंत्र रक्ती कति. जना शक शक । यथा जया भाग करत, श्रुतिक छन। व्यवार्थ करुति गांत, शक्क कुलवांना क्यां शिक महोत्रथी, टमरे कूलराज्य I लिएस श्रेष वाटक मन, क्षेत्रहम कुटून । मांगातम रेममाद्धानी, मामा जां कि मुंदन शितिशो मुकूल वान, तटक् महकात। তুলন। ভাহার আর. দিন সহ কাব ? भेनाम जियुन कूल, नमहस्रुत हो 🕬 🛶 कारगंकीरगं तरह, दशरम बक्कवर्ग होरंग ॥ অশোক করিল সবে, ফুটিয়ে অশোক। दिगांक भी दिवकी मा, इहेन अरुगांग म वाकांवि त्मदुर कुम नामि नामि कृटि। गटक विद्रहिनी धूटक, यम रज कृटें। खतव्य निरुक्त च**७**, दशवासाकात। পাংকি শাথিপারে, স্মন্ত রধ্বাদা করে। रमस अशीम मिन, रोटफ़ मिन मिन। निना उत्र क्या कार्य, जिस जिस जीन ।

মধায়সক !

ন্তরন্ত বসন্তকাল, কাল বিবহির।
মনোত্র্থ কবে কাম. কাম নহে দির।
বিরক্ত দহন, দহন করে ডাম:
স্থাতিল বারিতে বারিতে নাহি পায়।
চাছে প্রাণ যায় প্রাণ যায়, মে বিহুমে।
দ্বীরের ভার ভার, ভাবে মুমেনান।
করি ফুলগ্রু, কুলগর্ স্থানান।
হানে পঞ্জার পঞ্জার গ্রশাণ ৪
ডাহে কুত্রেবে, কুত্রুবে অনুক্ষণ।
ভাকিছে দে ববে রবে, কার দ্বির মন?
প্রের স্থাকর কর, গোলিতা কুলনী।

विश्व किया, जोता, त्यित निर्माणिक विश्व किया, गत्य क्यान कि मुख्य करत । व्याद जोशोशीय जोता शिंक गुळ करत ॥ अवि कृतने करत रहम, कृत्य कृतन तहम । वृत्य प्रभुतात, कृत्य कात तहम ॥ विश्व किया छान, खम्मछम करत रमरण । क्याप जात छोत जोत भाग स्थारमारमहरू ॥ सम्म भाम रहक, भाम गेरक मनुष्य । रम शहम बोरम किकान विश्व मनुष्य ।

ক্ৰিবাকা:

্কান রমজ্ঞ ভাবুক বসন্ত প্রদেশ্যের মনীর মঞ্চালিত চৃত্যগুরীর বর্ণন কারতে জন ব্রোধ করিলে, তদীয় মছচর জনৈক কবি প্রশালিখিত কবিতাটী রচনা ব্যালেন

े श्रुष्त कार्ट्स स्थ समय क्षित्र के उपा क्षित्र के उपा क्ष्म स्थान कर कर्मा कार्य क्ष्म क्ष्म हिंद्य के उपा कार्य कार्य के उपा कार्य कार्य के उपा कार्य के उपा

क है गर महार मृहातन भूभागरकः करामकर व उपनकार जाकारक रिमायनिक समयापि उपनाह र नवीरहर्शिकेश्वर मयद्वप्रशिक्त पुरुष्टिकः। पुरामा गृहीनर नहि महि महीरकार कुकरकः। থকলন কৰি সরোবরে স্থানার্থ গালন ক রিলে তথায় সালস্কৃতা, সর্বাজস্পারী এ-কটা কামিনী অবগাহন করিয়া কেন ঝা-ডিতেছে, দেখিতে পাইলেন। কিছু কা-ল পর কামিনীটা স্বগৃহে গামন করিল, কবি ও স্থান করিয়া গৃহে আইলেন, তাঁহার রহস্যাপ্রিত বন্ধু জিজ্ঞাসা করিলেন, "বন্ধো। স্থান করিয়া আইলে, ভাল সরোবরতীরে আক্রণজনক কি দেখিলে বল দেখি ও কবি নিম্নলিখিত কলিতাটা পাঠ করিলেন।

অবাদে জলস্কান আহে বিশ্বাস আঁকর,
বাহিছে মুক্তা, নতে বিশ্বাস আঁকর,
আশত্রিটে আন্দের্গান করে বাহিনীনমন,
ইফাল মানি মা মান আঁকর হল।
কর্ম ক্রিয়া সাধ্য, নার্না পানন,
আন্দ্রায়াল ক্রিয়া সাধ্য, নার্না পানন,
আন্দ্রায়াল ক্রিয়া সাধ্য, নার্না পানন,
আন্দ্রায়াল ক্রিয়া সাধ্য, নার্না পানন,
আন্দ্রান করিয়া সাধ্য, নার্না পানন,
আনন ভালচান জানি ক্রিয়া নার্না ক্রিয়া সাধ্য,

 অকাস অস্কারলী কিরতু নাম মুক্রাবলী রপর্কতি বিধুদ্ধ লগদ মুন্দ শাতে কুতি: ' ইদপ্ত থক্দব্যতঃ বদনপারি বিক্রাল্লতা বলস্থিকাকাচল র্যমধ্যেমুগত নৃত্যাতি॥

এই মানিকপত্রিকা চাকা-মোগনটুরিত সুলভ্যক্তে , মুদ্রিত হইয়া প্রতি মাসে জীকালিপদি নিত্র কর্তৃক প্রকাশিত হয়: